श्री राजनारायण : उस पर आ रहा हूं। जब गलती हो गई तो दुख प्रकट होना चाहिए, इतना ही नहीं कि गवर्नमेंट को अवगत कराएंगे सदन की भावना से।

श्री मान सिंह वर्मा : सदन के नेता को कुछ कहना चाहिए था।

3HRI LOKAN'ATH MISRA: The Leader of the House should say that this will not be repeated. What is this? Things come in the newspapers without the House being informed of it. You have not even placed the report on the Table of the House. This is contempt of the House. What is this?

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI K. K. SHAH): Mr. Lokanath Misra is aware of it—which party, even about its most secret of meetings, is able to stop something appearing in the press? We are all helpless.

SHRI LOKANATH MISRA: This is no explanation.

SHRI BHUPESH GUPTA: The hon. Minister is speaking like an orphaned boy—'helpless' and all that.

श्री राजनारायण : यह कांग्रेस सरकार है। इस समय श्री के० के० शाह ने जिस ढंग से बात कही है कि मैं हेल्पलेस हूं, तो क्या यह सरकार है? यानी हम लोगों के ऊपर डंडा चलाने की शक्ति तो है, उस के लिए सरकार है, लेकिन जो उचित काम होना चाहिए उस के लिए सरकार नहीं है।

श्री उपसभापति : राजनारायण जी, अब आप कालिंग अटेंशन पर आइये।

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE-RECENT BROADCAST BY RADIO PEACE AND PROGRESS IN USSR.

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : सोवियत संघ के रेडियो पीस ऐंड प्रोग्रस द्वारा हाल के ऐसे प्रसारण के द्वारा कि लोकतांत्रिक शक्तियों की आपसी एकता भारत में राज्यों में तथा केंद्र में भी प्रतिक्रियावादियों के मार्ग में एक दृढ़ तथा विश्वसनीय अवरोध है, हमारे आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप किए जाने के संबंध में ध्यान दिलाने की सूचना मैं दे रहा हूं।

श्रीमन्, मैं एक व्यवस्था आप के द्वारा चाहता हूं। यह तो जो हमारे पास से गया है आज का ध्यान आकर्षण प्रस्ताव वह है और मैंने जो दिया था कि, मास्को रेडियो द्वारा इस आशय के समाचार कि भारत में प्रगतिवादी तत्व जिस में कम्युनिस्ट दाखिल हैं, यदि एक हो जायें तो प्रतिक्रियावादियों का सामना किया जा सकता है, इस प्रकार मास्को रेडियो द्वारा भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप हो रहा है। इस की ओर मैं सरकार का ध्यान आकर्षित करता हूं। यह हमारा दिया हुआ है। मगर इस को एक ऐसे ढंग से बदल दिया जाता है कि जिस का भाव ही कुछ विपरीत हो जाता है। बिल्कुल विपरीत हो जाता है मैं ने जो दिया है वह तो यह है।

श्री उपसभापति : आप ऐसा कीजिए। जवाब सुन लीजिए और उस के बाद क्लैरिफिकेशन कर लीजिएगा। जो कुछ पूछना चाहते हो वह समय का ध्यान रखते हुए पूछ लीजियेगा।

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI SURENDRA PAL SINGH): Mr. Deputy Chairman, as the House is aware we have in the past drawn the attention of the Soviet authorities to critical references to Indian political parties and personalities that have appeared in the broadcasts of Radio Peace & Progress. The position of the Soviet Government has been that this radio station is an independent organisation, and is not a Government concern and that their official radio stations and newspapers do not make references to which the Government could take exception. They have also drawn our attention to many statements and publications appearing in India which are critical of the Soviet leaders and Soviet policies.

Government are aware that broadcast comments abroad on recent developments in India have followed varied patterns depending upon the assessment and ideological bias of the author concerned.

We are convinced that our people have all information at their disposal and are politically conscious to form their own judgment on developments in our country. Nevertheless, Government attach importance to broadcasts emanating from the U.S.S.R., a country with which we have close and friendly relations. For this reason. Government will continue to invite the attention of the Soviet authorities to broadcasts from Radio Peace and Progress which are liable to create m isunderstandings.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, पहले तो मैं यह जानना चाहूंगा कि इस सरकार ने कब रूस की सरकार को इस संबंध में लिखा और क्या लिखा। वह तारीख और वह तथ्य क्या सरकार सदन के पटल पर रखेगी ? दूसरी बात, सामान्य ढंग से केवल रूस को यह कह दिया गया कि वह क्रिटिकल रेफरेंस देश की पोलिटिकल पार्टीज के बारे में नहीं होने चाहियें, केवल इतना ही सरकार अपना कर्तव्य समझती है या इससे आगे भी जाना चाहती है। इस के बारे में भी मैं सरकार की नीति जानना चाहता हूं कि सरकार इस संबंध में क्या नीति रखती है ? और तीसरी बात, रूस कोई पारदर्शी चश्मा नहीं रखता कि भारत के अंदर की जो घटनायें होती हैं उन की सही सही जानकारी रूस को हो जाय। इस के बारे में सरकार क्या कोई व्यवस्था करेगी, क्योंकि श्रीमन्, जो मास्को रेडियो का प्रसारण है वह इतना असत्य है, इतना बेबुनियाद है, इतना गलत है कि कुछ कहा नहीं जा सकता और मैं जानना चाहता हूं कि उस के बारे में इस सरकार ने क्या किया है ?

इसको देखा जाय कि उस का प्रसारण है क्या? प्रसारण उत्तर प्रदेश के बारे में कहता है कि श्री चन्द्रभानु गुप्त की सरकार जो थी वह केवल समाजवाद का नारा देती थी और उस के बारे में वहां की जनता विक्षोभ में थी। अब श्री चरण सिंह जी की जो सरकार बनी वह प्रगतिवादी तत्वों को ले कर बनी है और यह जनता को समाजवाद देगी। मैं कहना चाहता हूं कि भारत की सरकार को इस बारे में सफाई और ईमानदारी के साथ, राजनीतिक विश्लेषण के साथ जाना चाहिए था और क्या इस सरकार ने यह किया या नहीं ? मेरा प्रश्न है और इस से संबंधित है कि चन्द्रभानु गुप्त की सरकार जो भी रही हो, वह अपराधी घर जो कांग्रेस का टूटा उस के पहले या उस के बाद, उस से हमारा कोई संबंध नहीं है, मगर जिस तरीके से श्री चरण सिंह की सरकार आयी उस से क्या यह साबित होता है कि क्या वह सरकार समाजवादी है या प्रगतिशील है ? चन्द्रभानु गुप्त की सरकार ने संसोपा के कार्यक्रम को अपनाया। चन्द्रभानु गुप्त की सरकार ने कहा कि संसोपा के सवा 6 एकड़ के लगान को हम उत्तर प्रदेश में माफ करेंगे। केवल कहा ही नहीं, उन्होंने इस के लिए अध्यादेश जारी किया। उन्होंने इस के लिए अध्यादेश जारी किया लगान माफी का और किसानों को जोत बही देने का, यानी किसानों के पास अब उन की जोत का पूरा नकशा रहेगा बकायदा . . .

SHRI AKBAR ALI KHAN (Andhra Pradesh): We are dealing with clarifications on this matter.

श्री राजनारायण : यस, यस, यही है श्रीमन्। मैं क्लैरिफिकेशन दे रहा हूं कि इस के बारे में सरकार ने क्या किया। श्री चन्द्रभानु गुप्त ने जिस कार्यक्रम को अपनाया संसोपा के सहयोग को पाने के बाद और दूसरे तत्वों को साथ लेने के बाद, मैं जानना चाहता हूं कि उन का वह कार्यक्रम समाजवादी था या नहीं ? 85 फीसदी किसान उस राज्य में सवा 6 एकड़ की जोत रखते हैं. . .

श्री उपसभापति : आप सवाल पूछिए।

श्री राजनारायण : क्या सरकार इस बात को जानती है कि 85 फीसदी किसान उत्तर

[श्री राजनारायण]

प्रदेश में सवा छः एकड़ की जोत के नीचे आते हैं। लगातार संसोपा की मांग थी कि अलाभकर जोत के किसानों का लगान माफ किया जाय। उस को अगर श्री चन्द्रभानु गुप्त मानते हैं और उस के लिए अध्यादेश जारी करते हैं तो व हो गये प्रतिक्रियावादी, रिएक्शनरी और जो चरण सिंह की सरकार, जिस को श्री भूपेश गुप्त और श्रीमती इन्दिरा रानी का समर्थन प्राप्त है और जो कहती है कि हम गरीब किसानों का लगान माफ नहीं करेंगे वह हैं प्रगतिवादी। मास्को रेडियो उस को दकियानूसी नहीं मानता। अभी सबेरे हम बोल चुके हैं और बता चुके हैं श्री के० के० शाह जी को कि विशेष अवसर का सिद्धांत क्या है और इसे भारतवर्ष के एक राज्य में सब से पहले संसोपा के सहयोग से चलाने का प्रयत्न किया गया था कि जो अलाभकर जोत वाले किसान हैं उन का लगान हम माफ करेंगे. . .

श्री उपसभापति : आप सवाल तो पूछिये।

श्री राजनारायण : इस की सफाई सरकार किस तरह से करेगी मैं यही बात जानना चाहता हूं और मैं यह जानना चाहता हूं कि राज्य सरकार की बात भी बतायी जाय। मै यह जानना चाहता हूं कि श्री चरण सिंह, जो कहते है कि साढ़े बारह एकड़ तक के किसानों की लगान माफ होगी यानी बड़े किसानों का लगान माफ करेंगे उन को अगर भूपेश जी और इन्दिरा जी प्रगतिवादी मानते हैं तो उन से बढ़ कर मैं समझता हूं कि प्रतिक्रियावादी और समाजवाद विरोधी कोई और है नहीं। श्रीमन्, हरिजनों को जो जमीन बांटने का हमारा कार्यक्रम था, बाकायदा उस का अध्यादेश था कि फैक्टरियों की जमीन ली जायेगी और उस का समान वितरण होगा। इस सरकार ने इस के बारे में क्या खंडन किया है ? क्या जो...

श्री उपसभापति : रेडियो के बारे में पूछिय।

श्री राजनारायण : क्या जो हमारा 13 सूत्री कार्यक्रम उत्तर प्रदेश में लागू होने जा रहा था, जिस से हरिजनों को जमीन मिलती, अध्यापकों को नियत समय पर तनख्वाह मिलती और जिस में विद्यार्थियों को समान शिक्षा मिलती, उन सब बातों के बारे में इस सरकार ने मास्को रेडियो को क्या लिखा है ? यह मैं जानना चाहता हूं। मास्को रेडियो बिल्कुल झूठा है, प्रतिक्रियावादी है और वह समाजवाद के नाम पर पूंजीवाद, निकृष्ट ढंग का पूंजीवाद चलाना चाहता है। पूंजीपतियों की गुलामी जिस ढंग से इन्दिरा गांधी, कम्युनिस्ट पार्टी भारत की, कर रही है उस तरह की गुलामी किसी समाजवादी तत्व के लिये शोभा की बात नहीं है। इसलिये, श्रीमन्, मैं चाहता हूं कि भारत की सरकार अपनी ओर से कार्यवाही करे। सरकार क्या कर रही है। कार्यक्रमों की तुलना हो। इसमें लिखा हुआ है,............

श्री उपसभापति : राजनारायण जी, आपने छः मिनट ले लिया।

श्री राजनारायण : छः मिनट और दे दीजिये।

श्री उपसभापति : नहीं, दो मिनट में खत्म कीजिये।

श्री राजनारायण : बीच में बोलियेगा नहीं। मेरा पूछना है कि क्या भारत की सरकार ने रूस की सरकार को लिखा कि लोकतंत्री शक्तियों से तुम्हारा क्या मतलब, प्रगतिशील से तुम्हारा क्या मतलब। तो जो प्रतिक्रियावाद के मूर्तिमान स्वरूप हों, जो चरण सिंह यह एलान करें कि आन्दोलन, सत्याग्रह, अनशन का दमन करेंगे, इनको चलने नहीं देंगे वह प्रगतिशील हो गये। जो चरण सिंह कहें कि विद्यार्थियों का सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन के कामों में दिलचस्पी लेना अनुचित है वह प्रगतिवादी हो गये। जो चरण सिंह कहें कि ढाई एकड़ के नीचे के किसान की जमीन ले ली जाय वह प्रगतिवादी हैं। अनावश्यक ढंग पर प्रगति और प्रक्रिया शब्दों का प्रयोग हो रहा है, अनावश्यक ढंग पर आज दक्षिणपंथी और वामपंथी शब्दों

श्री लोकनाथ मिश्र : एक बात मैं अभी ही पूछ लूं। रेडियो पीस एंड प्रोग्रेस का जो अनुष्ठान वहां बना है उसका जो पैसा खर्चा होता है वह कहां से आता है, रशियन गवर्नमेंट देती है या और कहीं कोई किसी सोर्स से वहां आता है जैसे कि इंडिया में आता है।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, एक प्वाइंट हमारा भी है। माननीय मंत्री इसको भी साफ कर देंगे जब कि वह सफाई करने जा रहे हैं। हमने केवल मास्को रेडियो नहीं कहा है, हमने दोनों कहा है। रेडियो पीस एंड प्रोग्रेस, मास्को, से जो 19 फरवरी को प्रचार हुआ वह भिन्न है और मास्को रेडियो ने जो प्रचार किया वह भिन्न है। हमने दोनों के बारे में कहा है। करीब करीब जो भाषा रेडियो पीस एंड प्रोग्रेस ने कही है वही मास्को रेडियो ने भी कही है और हमने जो बात अभी कही है वह मास्को रेडियो के बारे में कही है।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : अध्यक्ष महोदय, इसमें स्थिति यह है कि इस मामले को हमने कई मर्तबा रूसी सरकार से लिया है और कहा है कि इस किस्म के जो ब्राडकास्ट होते हैं वह एक किस्म से मिसअंडरस्टैंडिंग क्रिएट करते हैं, वह न हों तो अच्छा है। सब से पहले जहां तक हमारा खयाल है 1967 ई० में . . .

श्री राजनारायण : न हो तो अच्छा है। भारत की सरकार ने यह क्यों नहीं लिखा कि बहुत ही बुरा है।

श्री लोकनाथ मिश्र : यह कैसे लिखेंगे।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : जरा मुझे कह तो लेने दीजिये। . . . मिडटर्म एलेक्शन के जमाने में कुछ ब्राडकास्ट ऐसे हुए थे रेडियो पीस एंड प्रोग्रेस के और जिसको स्टडी करने के बाद गवर्नमेंट आफ इंडिया ने सोचा था कि ये ब्राडकास्ट ऐसे है जो अपने इंटर्नल अफेयर्स में इंटरफियरेंस माने जा सकते हैं और हमने रूसी सरकार के दूतावास को बुलाकर यह कहा था कि इस किस्म के ब्राडकास्ट अच्छे नहीं हैं, ये गलत हैं, ये नहीं होने चाहियें, उस वक्त उन्होंने यह कहा कि पहली बात तो यह है कि रेडियो पीस एंड प्रोग्रेस जो है वह एक आटोनामस बाडी है, आजाद है, यह हमारे कंट्रोल में नहीं है . . .

श्री लोकनाथ मिश्र : पैसा कहां से आता है।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : . . . रेडियो पीस एंड प्रोग्रेस को उतना ही अख्त्यार है हिन्दुस्तान की पार्टियों को, यहां के आदमियों को क्रिटिसाइज करने का जितना कि. . .

श्री लोकनाथ मिश्र : पैसा कहाँ से आता है, यह तो बतायें।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : सुन तो लीजिये। . . . हिन्दुस्तान के अखबारों को या यहां के और लोगों को, इनडिविजुअल्स को, अधिकार है रूस वालों को क्रिटिसाइज करने का।

श्री लोक नाथ मिश्र : हिन्दुस्तान का अखबार सरकारी पैसे से चलता नहीं है।

Are you so naive and innocent as not to understand these implications? The Government of India does not pay any money to the local papers whereas 100 per cent of the money spent on the Radio Peace and Progress is given by the Russian Government.

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : यह तो मैं जानता नहीं कि कहां तक वह फाइनैंस करते हैं, हां यह मैं मानने को तैयार हूं कि जितनी आजादी हमारे अखबारों को है, यहां की पार्टियों को है गालिबन उतनी आजादी वहां न हो, किसी किसी में कंट्रोल हो, मुझे मालूम नहीं, लेकिन जो हमने पूछा उस पर उन्होंने बताया है कि इसमें किसी किस्म का उनका कंट्रोल नहीं, उसकी पालिसी के ऊपर और उनके विचारों के ऊपर कोई किसी किस्म का कंट्रोल गवर्नमेंट का नहीं, अगर कोई इनडाइरेक्टली फाइनैंस करते हों तो मालूम नहीं. . .

SHRI LOKANATH MISRA: Do you believe it?

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : और क्या करूं। हमारे सम्बन्ध उनसे अच्छे हैं, फ्रैंडली कंट्री है। उनसे पूछते हैं तो वह कहते हैं कि यह आजाद है,

का प्रयोग हो रहा है। दक्षिणपंथी और वामपंथी व्यापक और निरर्थक शब्दों का प्रयोग कर के आज हमारे भारतवर्ष की राजनीति में एक दलदल पैदा किया जा रहा है। श्री भूपेश गुप्त जी हमारे मित्र हैं, मैं इनकी इज्जत करता हूं, मगर मैं इनसे कहना चाहता हूं, इनके सिर पर हाथ रख कर कहता हूं, हे भूपेश गुप्त जी, इन्दिरा रानी के साथ जो तुम्हारा अपवित्र गठबन्धन हुआ है वह आज देश की, समाजवाद की और जनतंत्र की हत्या करने जा रहा है इसलिये उस अपवित्र गठबन्धन को तोड़ो और अगर समाजवादी हो, जनतंत्री हो तो हमारे साथ आओ, उधर काहे को जाते हो।

श्री अकबर अली ख़ान : आप के साथ या जोशी जी के साथ।

श्री राजनारायण : देखिये, संसोपा एक जनतंत्री पार्टी है, विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हमने सब को दी है मगर हमारी पार्टी का फैसला है। सोनपुर का सम्मेलन अबाध, मुक्तकंठ से कहता है–केन्द्र की इन्दिरा की सरकार को गिराओ! मुक्तकंठ से कहता है कि हम इनको समाजवादी नहीं मानते, मुक्तकंठ से कहता है कि यह वंश-परम्परा प्रतिक्रियावादी सरकार की एक लड़ी की कड़ी है, इसलिये संसोपा का सोनपुर का जो प्रस्ताव है वह अपनी जगह पर अक्षुण है, साफ है। हां, अगर संसोपा से किसी को दृष्टि-दोष हो जाय, कोई उस प्रस्ताव को ठीक से न पढ़े तो कोई बात नहीं है। आदमी आयेंगे जायेंगे पर संसोपा पार्टी अपनी जगह पर चलेगी। इन्दिरा रानी को श्री के० के० शाह साहब समझा दें कि उनका प्रभुत्व, उनका धन, उनका दबाव, उनकी तमाम साजिशें संसोपा पार्टी का बाल बांका नहीं कर सकतीं, इस पार्टी की जो नींव है वह शेषनाग के फन पर गड़ी है, यह पार्टी चलेगी क्योंकि यह प्रोग्राम की पार्टी है, यह सिद्धांत की पार्टी है, यह कार्यक्रम की पार्टी है।

श्री उपसभापति : राजनारायण जी, काफी समय हो गया।

श्री राजनारायण : इसलिये जो मास्को रेडियो का प्रचार करा कर यहां की राजनीति में जो नाजायज हस्तक्षेप कराया जा रहा है उस पर तुरन्त पाबन्दी यह सरकार लगाये। तो क्या हमारे इस सुझाव को सरकार मानेगी।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : अध्यक्ष महोदय, जवाब तो माननीय सदस्य ने अपने आप ही दे दिया है। उनकी कुछ विचारधारायें हैं इस मामले में, सोशियो-एकानामिक-प्रोग्राम के बारे में, वह सब आपने यहां हाउस को बता दिया बड़ी आजादी के साथ खुले तरीके पर। तो उनको यह भी मालूम होना चाहिये, जानना चाहिये कि औरों को भी अधिकार है अपने खयालात का इजहार करने का।

श्री राजनारायण : आम को आम कहें, आम को इमली तो न कहें।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : अब यह कि थोड़ी सी कुछ गलतफहमी माननीय सदस्य के दिमाग में है कि मास्को रेडियो और रेडियो पीस एंड प्रोग्रेस एक ही है। जो कुछ उन्होंने बताया है या जो कुछ लेटेस्ट ब्राडकास्ट हुआ है जिसका उन्होंने एक उल्लेख किया वह मास्को रेडियो का नहीं है वह रेडियो पीस एंड प्रोग्रेस का है। यह पहले ही बताया जा चुका है कि रेडियो पीस एंड प्रोग्रेस जो है उसका कोई सम्बन्ध मास्को रेडियो से नहीं है, मास्को रेडियो सरकारी रेडियो है, उनके कंट्रोल में है और रेडियो पीस एंड प्रोग्रेस जो है. . .

श्री राजनारायण : श्रीमन्. . .

श्री लोक नाथ मिश्र (उडीसा) : एक सवाल मैं पूछना चाहता हूं।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : आप बाद में सवाल पूछ लेना।

श्री बालकृष्ण गुप्त (बिहार) : उसमें कोई भी चीज सरकारी कंट्रोल के अन्दर है या नहीं।

इसकी पालिसी पर किसी किस्म का कंट्रोल नहीं है तो फिर हम आखिर यकीन न करें तो क्या करें। सवाल यह है कि आखिर उन्होंने क्या कहा है। इस चीज को, इस ब्राडकास्ट के सिलसिले में जो 19 फरवरी को हुआ बतायें कि इसके अंदर कौन सी ऐसी चीज है जो कि आबजेक्शनेबल है।

श्री राजनारायण : आबजेक्शनेबल नहीं है तो भारत सरकार ने लिखा क्यों।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : कभी लिखा नहीं।

श्री राजनारायण : श्रीमन् प्वाइंट आफ आर्डर।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : वह सन् नहीं, अध्यक्ष महोदय। जरा सुन लीजिये। सन् 1967 ई० में, फरवरी में हमने प्रोटेस्ट की थी कि मिडटर्म एलेक्शन के दौरान में जो ब्राडकास्ट की है ये ब्राडकास्ट ऐसे हैं जिनको इंटरफियरेंस मानते हैं अपने इंटरनल अफेयर्स में वह बात उस वक्त खत्म हुई। अब यह जो रेडियो पीस एंड प्रोग्रेस का है जिसमें गुप्ता जी का जिक्र किया गया इसके मुताल्लिक हमने कोई किसी किस्म की प्रोटेस्ट नहीं की है . . .

श्री राजनारायण : श्रीमन् . . .

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : जरा सुन लीजिये। . . . कोई प्रोटेस्ट नहीं की है,। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि इस रिपोर्ट के अन्दर कौन सी ऐसी चीज है जिसके ऊपर आबजेक्शन लेते हैं। उससे कहीं ज्यादा ज्यादा चीजें हमारे मुल्क के बारे में वेस्टर्न प्रेस में आती हैं, यह साफ कहते हैं कि हमारी प्राइम मिनिस्टर तो कम्यूनिस्ट है, प्राइम मिनिस्टर मुल्क का नुकसान कर रही है। तो वह सब बात चलती है। . . .

SHRI LOKANATH MISRA: Sir, on a point of order. We cannot be led away oy the process which the hon. Deputy Minister is resorting to. There is a cletr distinction between a Government-owned, Government-sponsored, Government-financed thing and an independent thing. Now, you cannot compare the Radio Peace and Progress with the Hindustan Times or the Times of India or the Indian Express. Is the hon. Deputy Minister that naive and innocent not to understand the difference between the two? He compares Radio Peace and Progress with any newspaper of the Western countries, demo^icies. Can there be any comparison between the two? You must snub the Minister if he goes on sa.y'ng like this in the House.

MR. E>tfPUTY CHAIRMAN: Let kj,r, express his views.

SHRI SURENDRA PAL SINGH: I have already clarified this point that we did take up this matter with the Soviet Government and they have assured us and have clarified the position that this particular Radio is not under the control of the Moscow Radio. The Radio Peace and Progress have their own organisers, their own editors; they have their own policy. If they express any views which are unpalatable to us how can you object to it?

श्री राजनारायण : श्रीमन्, एक प्वाइन्ट और आ गया है। मैं चाहूंगा कि आप सरकार को यह सबक दे दें कि पश्चिम के मुल्कों में क्या हो रहा है, अगर वह गलत है, तो उस गलत को सफायी के रूप में रूस में क्या हो रहा है उसके लिये सरकार पेश न करे।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैंने कभी नहीं कहा गलत हो रहा है। वहां भी ठीक हो रहा है यहाँ भी ठीक हो रहा है, जो यहां हो रहा है वह भी ठीक है हम पूर्ण आजादी में बिलीव करते हैं। अध्यक्ष महोदय, मैंने माना अगर एक मर्त्तबा यह रेडियो पीस एन्ड प्रोग्रेस गलत है, या वह ऐसी बात हमारे लिये कहता है, तो आप क्यों घबड़ाते हैं, क्यों परेशान होते हैं। कहने दीजिये।

श्री राजनारायण : अब श्रीमन्, आप इस बात को देख लें कि आज भारत की, सरकार मास्को के रेडियो द्वारा जो प्रसारण हो रहा है उसमें कोई आब्जेक्शनेबल चीज नहीं आ रही है और यह कहती है कि जैसा करते हैं करने दीजिए, जो कहता है वह ठीक है, उसमें

[श्री राजनारायण]
हमको कोई आपत्ति नहीं है । यानी इसका मतलब यह हुआ कि क्या मैं यह समझूं कि भारत की सरकार के इशारे पर, भारत की सरकार की सहमति से मास्को रेडियो इस ढंग का प्रसारण कर रहा है । क्या इसका मतलब यह है ।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : बिलकुल नहीं, अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य गलत कह रहे हैं ।

श्री राजनारायण : मै आज बुलन्द आवाज करके कह रहा हूं, मैंने एक दिन पहले भी कहा था कि : Indira is going to be the first Prime Minister of the Russian imperialism आज कांग्रेस की अंतिम प्रधान मंत्री इंदिरा नेहरू गांधी रूसी साम्राज्यवाद का प्रथम प्रधान मंत्री हो सकती है । आज सरकार के उत्तर ने सदन के सम्मानित सदस्यों को यह बिलकुल साफ कर दिया है कि मास्को रेडियो का प्रसार जो हो रहा है इस सरकार की दृष्टि में उसमें कोई आपत्तिजनक बात नहीं है । मैं यह जानना चाहता हूं : क्या यह सरकार इसको पसन्द करती है कि कोई भी विदेशी रेडियो इस देश की पार्टियों के बारे में कहे कि सवा छः एकड़ की लगान माफ करना प्रतिक्रियावादी है, अध्यापकों की तनख्वाह निश्चित करना प्रतिक्रियावादी है, हरिजनों के लिये कुओं का पानी देना प्रतिक्रियावादी है, विद्यार्थियों की फीस माफ कर देना प्रतिक्रियावादी है . . .

श्री उपसभापति : ये सारी बातें आपने कह दी हैं ।

श्री राजनारायण : मैं जानना चाहता हूं कि भारत की सरकार की दृष्टि में क्या यह प्रतिक्रियावादी है । क्या पुलिस के भ्रष्टाचार को दूर करना प्रतिक्रियावादी है । क्या श्रीमती इन्दिरा नेहरू गांधी के भ्रष्टाचार के बारे में आवाज उठाना प्रतिक्रियावादी है । ये तमाम सवाल हैं जो देश को प्रतिक्रियावाद की तरफ ले जाकर देश के वातावरण को क्षुब्ध कर रही है जिसका नतीजा आज देश की आजादी को खतरा बन रहा है ।

श्री उपसभापति : अब आप बैठ जाइये ।

श्री राजनारायण : भारत की सरकार इसको साफ करे कि भारत की सरकार कहना क्या चाहती है, उसकी इच्छा क्या है और भारत की सरकार ने क्यों नहीं रूस से प्रोटेस्ट किया कि तुम जो भारत की पार्टियों के बारे में रेडियो से प्रचार करते हो गलत प्रचार करते हो । कितने दिनों तक यह चीज चलती रहेगी । मैं जानना चाहता हूं कि क्या सरकार यह कहती है कि रामसुभग सिंह प्रतिक्रियावादी हैं, पूंजी वादी हैं और दिनेश सिंह क्रांतिकारी और समाजवादी हैं या कामराज प्रतिक्रियावादी और पूंजीवादी हैं कर्ण सिंह प्रगतिशील और समाजवादी हैं . . .

श्री उपसभापति : भाई, आप यह सब पहले कह चुके हैं । अब आप बैठ जाइये ।

श्री राजनारायण : राजाओं को अपने साथ लेकर, नरेशों को लेकर, एक्स ताल्लुकेदारों को लेकर जो सरकार चल रही हो, क्या उस सरकार को हम प्रगतिशील मानें । शरम आनी चाहिये इस प्रगतिशीलतावाद पर, शरम आनी चाहिये इस समाजवाद पर जो आज देश की जनता के ऊपर नाजायज इनडायरेक्ट टैक्सेज् बढ़ा कर गरीबी बढ़ा रही हो । उस पर यह सरकार कहे हम प्रगतिशील हैं, हम समाजवादी है . . .

श्री उपसभापति : अब आप बैठिये ।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : उपसभापति जी, मैंने कभी यह नहीं कहा कि हिन्दुस्तान की सरकार जितना ब्राडकास्ट होता है मास्को रेडियो से या रेडियो पीस एन्ड प्रोग्रेस से, उसको पसन्द करती है, सबको अप्रूव करती है । मैंने सिर्फ यह कहा, पहले भी कुछ ब्राडकास्ट हुए थे जिनके बारे में गवर्नमेंट ने समझा गलत है, हमने प्रोटेस्ट भी किया और उनको बतलाया कि यह उचित नहीं है, जो कोई ब्राडकास्ट हो उसको

सही ब्राडकास्ट करें। यह तो हर ब्राडकास्ट का मैरिट देखा जाता है कि आया वह नेशनल हित में होता है या उसके खिलाफ पड़ता है और अगर खिलाफ है तो उसका विरोध जरूर करेंगे। लेकिन जो ब्राडकास्ट ऐसा हो जिसमें कोई खास बात नहीं है . . .

श्री राजनारायण : यानी वह कहें सवा छः एकड़ का लगान जो माफ हुआ है यह प्रतिक्रियावादी है--कोई खास बात नहीं है।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : अगर आप चाहते हैं, अगर हाउस की यह डिजायर है, तो इसका भी प्रोटेस्ट करेंगे, इसको भी नोटिस में लायेंगे ऐसा नहीं होना चाहिये। यह मैंने शुरू में कह दिया था, यह हम हमेशा कहते आ रहे हैं। बावजूद इसके इस किस्म का ब्राडकास्ट न हो तो अच्छा है, इससे हमारे लोगों की पसंदीदगी नहीं है, इससे आगे मुसीबत होगी, हमारे संबंध जो इतने अच्छे हैं उनमें खराबी न आये, उसमें किसी किस्म का असर नहीं पड़ना चाहिये लिहाजा ऐसा ब्राडकास्ट न हो तो अच्छा है। अगर वह यह प्ली लेते हैं कि हमारा आजाद स्टेशन है, तो दुनिया में सब जगह ऐसा है, हमारे यहां भी है, उनके यहां भी है। तो हम उनका ध्यान इस तरफ जरूर उठायेंगे।

श्री राजनारायण : ठीक है, दिलाइये।

SHRI M. K. MOHTA (Rajasthan): Mr. Deputy Chairman, the Government is treating the House like a bunch of infants. It is common knowledge that there is nothing in Russia that is owned privately, and still the Government goes on repeating here in the House that the Radio Peace and Progress is private-owned and privately-managed. I do not know how such things are repeated again and again in the House. What I want to know from the hon'ble Minister is whether the broadcast by the Radio Peace and Progress is considered undue interference in the internal matters of India or not. I mean this particular broadcast which has been referred to. If it is considered so, may I know what steps have the Government taken with the Government of the U.S.S.R. on the one hand and with the accredited correspondents of this Radio Peace and Progress in India itself? I understand that this is a well-established practice that the correspondents are called and asked to explain their despatches if they are considered objectionable and an undue interference in the internal matters of the country. May I know whether that procedure has been followed in this matter or not?

SHRI SURENDRA PAL SINGH: Sir, I have already clarified the position. As regards the finances, etc. of the organisation, as I said, it is quite possible that indirectly they may be financed by the U.S.S.R. Government. But I only said that that organisation is an autonomous body. It is autonomous in its policy.

SHRI RAJNARAIN: It is not correct.

SHRI SURENDRA PAL SINGH: Its editorial policy is not influenced by the Moscow Government. I have already said that those broadcasts which we thought amounted to interference in our internal affairs were objected to by us. This particular broadcast we do not think contained anything objectionable. But I assure Mr. Rajnarain that we will draw the attention of the Soviet authorities to this broadcast also.

SHRI B. T. KEMPARAJ (Mysore): In view of the answer given by the Minister concerned, I want to know whether the Government has made any efforts through the AH India Radio to rebut the propaganda that is being carripd on . . . *(Interruption by Shri Neki* Rami T sav keep auiet ....by the Radio Peace and Propress. The hon. Minister just now said that they have not token any action. Will the Government be in a position to place the reference, if there is any, to show that they have taken action against the nronaganda that has been made by the Russian Radio Peace and Progress on the floor of the House.

SHRI SURENDRA PAL SINGH : This question of All India Radio is a much wider question. As the House is already aware, suitable action is always taken by All India Radio and all other agencies of propaganda that we have under our control. Such actions are always taken whenever anything appears in the press anywhere in the world which is likely to go against our national interests. It is always rebutted by All India Radio and other agencies.

As regards the criticism that we have not taken any action so far against these broadcasts, we again propose to bring this to the notice of the Soviet authorities that in future, they should be more careful.

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): I hope I will also be heard with the same patience which I have shown towards others. First of all. Sir, I am not concerned with whether one likes these broadcasts or not. Surely, there will be some people who would not like the broadcast...

SHRI LOKANATH MISRA: Do you like it?

SHRI BHUPESH GUPTA: I very much like it. Do not disturb. I am sure Maharani Gayatri Devi would not like it. I am sure Mr. Nijalingappa would not like it.

I am sure Rajaji will not like it. I am sure Mr. Masani will never like it. I am sure Mr. Morarji Desai will not like it. and Mr. C.B. Gupta, least of all. Similarly there are others who may like it. That is not the issue at all. The question is about broadcasts from some country. I think this is perhaps the only Parliament where these things are raised. I have never heard of these things being raised in the British Parliament.

SHRI LOKANATH MISRA: In Russian Parliament?

SHRI BHUPESH GUPTA: They do not have Swatantra Members. The Russian Parliament will not consider these things because they do not have the like of you sitting there. If you interrupt, then I will answer you...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You may put your questions.

SHRI BHUPESH GUPTA: I should like to know how many protest notes have been sent to the Voice of America. Is it not a fact that the Voice of America broadcasts sometimes offend our anti-imperialist sentiments and all that we stand for and have stood for? The American broadcasts are openly insulting to all of us, all those who live in this country. American broadcasts depicted us as the aggressor in Pakistan. I should like to know how many protest notes have been sent to the United States of America or the Voice of America for that matter. I should like to know whether the Government considers such broadcasts as not only totally untrue—I am not talking of interference in our internal affairs—but a slanderous attack against all that is good in India. Or do I take it that just because some pressure is built here, they go on sending notes to the U.S.S.R.? They have no business to send such notes. I do not ask you to send notes to the Voice of America.

SHRI LOKANATH MISRA: I am one of those who would like protest notes to be sent to countries irrespective of whether it is the U.S.S.R. or the U.S.A. No foreign country can interfere in our internal affairs.

SHRI BHUPESH GUPTA: 1 only asked whether they have sent. My friend. Mr. Misra, knows little about international law. If you, as a citizen of India, commit a heinous crime in the United States of America, a note comes to your Embassy. The fact that you are a private citizen does not mean that the note will not come. Now, Sir I would like to ask whether they had sent any note at least to the Voice of America.

SHRI BHUPESH GUPTA: Sir, with regard to this matter, every day, a section of the Indian press is filled with filthy, anti-Soviet slanders and not a word is mentioned. Does the

Government tender an apology to the Soviet Government or at least express regret that some of the papers are carrying on such scurrilous, slanderous campaign against a friendly country? If Mr. Rajnarain's son does some wrong to me, he will come to me and express regret to me. I have no son, but if my brother does some wrong to Mr. Rajnarain, I will go and bow to him to seek his pardon. Do they do such things? Now. is it because . . .

श्री राजनारायण : श्रीमन्, हमारा एक प्वाइन्ट आफ आर्डर है ।

श्री भूपेश गुप्त : क्या प्वाइन्ट आफ आर्डर है ।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, आप श्री भूपेश गुप्त को जितना बोलने का मौका देना चाहते हैं वह आप दे सकते हैं, लेकिन मैं आप से यह निवेदन करना चाहता हूं कि यह ध्यानाकर्षण प्रस्ताव मास्को के रेडियो "पीस एन्ड प्रोग्रेस" के प्रसारण के संबंध में था । आपको इस बारे में एक व्यवस्था तय कर देनी चाहिये और उसी व्यवस्था को हमारे ऊपर भी लागू करनी चाहिये । हमने तो मास्को रेडियो से "पीस एन्ड प्रोग्रेस" द्वारा जो प्रसारण किया जाता है उसके बारे में कहा था जिस पर कि हमको एतराज है, लेकिन यहां पर अमरीकन वायस की जो बात की जा रही है, उस पर हमें एतराज है । हम यहां पर बतला देना चाहते हैं कि हम जितना रूसी पद्धति विरोधी हैं उतने ही अमरीकन पद्धति विरोधी भी हैं : इसलिए हम यह कहना चाहते हैं कि यहां पर अमरीका की सरकार ने क्या कहा और क्या नहीं कहा, यह इस समय चर्चा का विषय नहीं है । इस समय तो मास्को रेडियो में "पीस एन्ड प्रोग्रेस" द्वारा जो प्रसारण किया जाता है उस पर बहस हो रही है कि उसने जो कुछ प्रसारण किया है क्या वह उचित है । अगर उसके बारे में श्री भूपेश गुप्त कुछ सवाल पूछना चाहते हैं तो वे पूछ सकते हैं ।

SHRI BHUPESH GUPTA: He mentioned "protest notes". I am seeking clarifications on his statement. I am not certainly less relevant than the relevance of C.B. Gupta's biography here. I think I had been as relevant.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, हमारा फिर एक प्वाइन्ट आफ आर्डर है । मैं फिर आपके द्वारा श्री भूपेश गुप्त से कहना चाहता हूं कि वे अपनी बातों को एक हद तक ही सीमित रखें । पीस एन्ड प्रोग्रेस रेडियो द्वारा यह प्रसारण किया गया था कि उत्तर प्रदेश में श्री चन्द्रभानु गुप्त के कार्यक्रमों को जिन्होंने माना और सवा छः एकड़ तक की भूमि के संबंध में जो लगान माफ किया गया है, वे लोग प्रतिक्रियावादी हैं और श्री चरण सिंह के साथ जो लोग हैं वे प्रगतिवादी हैं ।

श्री उपसभापति : श्री राजनारायण जी, अब आप बैठ जाइये । आप पहले ही अपनी बात कह चुके हैं ।

SHRI BHUPESH GUPTA: Mr. Rajnarain is right. He says C. B. Gupta was wrongly mentioned. He can give his opinion. My opinion is this: The Peace and Progress Radio should say more about C. B. Gupta. There can be difference of opinion. He is right; he is relevant. Now, Sir, the Minister mentioned "protest". That is the point. I am not quarrelling over minor matters.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You please put your question.

SHRI BHUPESH GUPTA : Every national radio . . .

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि जिस समय श्री चन्द्रभानु गुप्त 1942 की लड़ाई लड़ रहे थे तो उस समय श्री भूपेश गुप्त माफी मांग रहे थे । अगर पीस एन्ड प्रोग्रेस यह बात कहता तो हमें कोई एतराज नहीं था । अगर वह यह भी कहता कि श्री चन्द्र भानु गुप्त ने मुल्क के बटवारे का विरोध किया था और वही ए० आई० सी० सी० में अकेले

[श्री राजनारायण]

आदमी थे जिन्होंने इस प्रस्ताव का विरोध किया था । उस समय कम्युनिस्ट पार्टी ही ऐसी पार्टी थी जिसने देश के बंटवारे के पक्ष में प्रचार किया था । तो मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर पीस एन्ड प्रोग्रेस द्वारा इस तरह का प्रचार कराना चाहते हैं तो हमें कोई एतराज नहीं है । लेकिन हम तो केवल उस पोर्शन से संबंधित हैं जिसमें श्री चन्द्रभानु गुप्त को पीस एन्ड प्रोग्रेस रेडियो ने प्रतिक्रियावादी कहा है ।

श्री उपसभापति : अब आप बैठ जाइये ।

SHRI BHUPESH GUPTA : Sir. I will not

श्री राजनारायण : आप पीस एन्ड प्रोग्रेस रेडियो से श्री चन्द्रभानु गुप्त के बारे में और खासकर जो हम से संबंधित बात है उसके बारे में जो कुछ कहलाना चाहते हो उसको लिखकर भेज दें ।

SHRI BHUPESH GUPTA: I would consider it.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, हमारा फिर प्वाइन्ट आफ आर्डर है और वह यह है कि जो ध्यानाकर्षण प्रस्ताव है वह बहुत सीमित है । हमारा कहना यह है कि पीस एन्ड प्रोग्रेस रेडियो ने यह कहा था कि उत्तर प्रदेश में श्री चन्द्रभानु गुप्त ने जिन लोगों के कार्यक्रम को माना वे प्रतिक्रियावादी हैं और श्री चरणसिंह जिन को मानकर चल रहे हैं, वे प्रगतिवादी हैं, तो हमारा निवेदन यह है कि इस तरह की जो बातें पीस एन्ड प्रोग्रेस रेडियो द्वारा प्रसारित की गई हैं वह बिल्कुल अनर्गल, झूठी और बेबुनियादी हैं ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Bhupesh Gupta,...

SHRI BHUPESH GUPTA: Sir, it seems I cannot say anything. You kindly sit down. I am dealing with his point of order. There is no mention of U.P. here. I do not know Hindi, but what is written in English is this: "...broadcast by the Radio Peace and Progress in the U.S.S.R. that unity among the democratic forces." This is a general statement. If somebody wants to bring it, I have no objection. On the basis of this statement. I am asking for clarifications. Now, he said about protest notes. Why send protest notes? Why should protest notes be sent to the Soviet Union? Every national radio is in a position to make broadcasts on international developments in other countries. Obviously they become controversial in some countries, in some section of the people in one country.

SHRI LOKANATH MISRA: Even than they call themselves friendly?

SHRI BHUPESH GUPTA: Well, that is for you to decide. But that right you cannot question. You may think they are unfriendly. Others may think they are friendly. Therefore. I say this is entirely wrong. Put a stop to this kind of note-sending to the Peace and Progress Radio or for that matter to the Soviet Government, which is not responsible for this radio.

It is running as an institution. Everybody knows it. There are institutions in the name of Rabindranath Tagore or Mahatma Gandhi. They are all good. They issue so many things Well, there are institutions there like them. They may be connected with certain personalities. What; about us? Suppose we receive notes from Pakistan and many other countries. I should like to know how many notes the Government is receiving everyday from various countries from whose policy or from whose criticism of this Government's policy we differ. Let them say those things in order to make us understand the position. The Peace and Progress Radio broadcasts in support of freedom struggle, in support of struggle for peace, in

support of national liberation. The Peace and Progress Radio is the only radio perhaps in the many countries of the world where Gandhiji or Ra-bindranath Tagore or men oi culture and letters are covered. Things about the Gandhi Centenary are broadcast from that. Therefore, Sir, what does this mean? It is a friendly radio and certainly this radio will be untruthful if it does not tell that in this country a light is going on between the rightist forces and the progressive forces. It is a radio which broadcasts if there is an earthquake in India. Therefore, these are matters which people broadcast according to their selections according to their understanding. It is possible that there are divergent views. I do not like any broadcast coming from the United States of America, but I do not ask the Government to send protest notes. Therefore. I protest against this policy of the Government of India in order just to irritate a radio station like this. You own a radio and you broadcast your answer. You own the All-India Radio. Mr. Misra can go there, Mr. Rajnarain can go there, to answer this thing. We have a radio also. Why this protest note? The Government has nothing to answer. Only because some people make noise here that you want to do this. You apologise to the Soviet Union for the kind of propaganda, anti-propaganda, you are doing here through your advertisements, through your patronage to some of the newspapers in this country and stop the anti-Soviet broadcasts in some of your speeches that are made over the radio. What about the parliamentary proceedings? Anti-Soviet speeches are made. Would you stop sending all those parliamentary proceedings? Suppose our parliamentary proceedings are sold in the Soviet Union; would it be regarded as an interference in the internal affairs of the Soviet Union? Therefore, I say the Government's attitude is cowardly in this country. It is a surrender to the pressures from certain quarters. I have nothing to say against any individuals. One may or may not like a person. But broadcasts are acclaimed and heard all ever the country, all over the world, by peace-loving and progressive people.

__ SHRI SURENDRA PAL SINGH: Sir, the main question posed by the honourable Member is whether we have protested against the broadcasts of the Voice of America or not. I am not in a position at the moment to say exactly whether we have protested or not, and if we have protested, on how many occasions. I have not got that information now. But I have myself said that some critical articles and broadcasts do emanate from Western Europe, America, from all over the world, against India. And we are not so allergic as to protest on every occasion we hear something which we do not like. As I said earlier on also, each broadcast or each piece of propaganda that is made against India is considered by us on its merits. If we feel that any broadcast is of a mischievous nature or is likely to cause or incite trouble in our country and amounts to an interference in our internal affairs, then, we will certainly protest against it, whether it is from America or Western Europe or Russia. The question which the honourable Member has asked is why we protested to the USSR. We made a protest because at that time we considered that broadcast as an interference in the internal affairs of our country. But we do not send a protest note after hearing every broadcast like, for instance, the rjresent one. As I said earlier on, we have not protested against it because we do not feel it is of a nature which merits any kind of protest on our part, but we will certainly bring it to their notice and impress upon the Russian authorities to use their influence with the Radio Peace and Progress so that the latter may use more suitable language in its future broadcasts.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY (Mysore): Sir, I understand the view of Mr. Bhupesh Gupta. He has said what he had to say. There is nothing novel about it. And what is surprising to me is the views expressed by my friend, the Deputy Minister, during the course of his statement. He said two things, firstly, "what we can do in the circumstances"; and secondly, "what is the objection in the broadcast"? And if he is helpless as he said

[Shri M. S. Gurupada Swamyj he is heipless, and if he has no objection because it is not objectionable, then my question is: Why protest at all? But 1 think he has made a slip in this and I will not take him seriously on this ground. But he has taken shelter under the plea that Radio Peace and Progress is a voluntary organisation. I want to know from the Minister and the Government whether they think that it is a voluntary organisation. The Soviet Union says so. But what do we think about it? The Soviet Union has been saying it *ad nauseam* off and on. We have also protested sometimes in the past. But our protests lack credibility. This is my point. We protested during the mid-term election. But the Soviet Union took the same plea that it is an autonomous body, a voluntary organisation, not controlled by the Soviet Government. Is it that we take the words of the Soviet Union on their face value, or, do we in our judgment think that this radio is nothing but an appendage of the Soviet Government? Some time back, during the Indo-Pakistan war, We protested against the BBC broad-broadcasts. I think the House will remember this. Both the Houses raised this issue. The BBC is a voluntary organisation, an autonomous body, created under an Act of Parliament whereas this radio in the Soviet Union is not created by any statute. It is run, managed, by the Soviet Government. This has been created as a special contrivance to project their own broadcasts and to relay their own propaganda and also cultivate what I would call, an aggressive partisanship and onenlv rupnort 'in friendly alliances and forces in various countries of the world. This is part of their propaganda. If it is a simple broadcast, I have no objection. But it is not a sin-role broadcast. Therefore, my question is whether the Government of India in their vis-dom still consider that this Radio Peace and Progress is genuinely a voluntary organisation enjoying autonomy, free from Government control. If thev think it is not a voluntary organisation in that sense of the term as the BBC, then, our protest has got to be more strongly worded. Our protests have not yielded any results so far. And correctly the Minister hassaid he is helpless. *(Interruption).* He is quite helpless. So, it is for the House to think what kind of action we have to take in such contexts in future. In the past we have protested. But that protest has not yielded any result. I am airaid this radio will go on broadcasting such nasty broadcasts which may tantamount to interference in the internal affairs of our country. Therefore, the House should express its total disapproval. As a sovereign body this Iinuse should express its resentment inst such broadcasts from the Moscow Radio or Radio Peace and Progress. And to draw an analogy between this radio and the radios in other countries is very misleading. Therefore, my specific point is that this House should go on record protesting against this kind of broadcasts and tell the Soviet Union that in future if such broadcasts are made, they will be deemed as an unfriendly act.

3 P.M.

SHRI A. D. MANI (Madhya Pradesh): I rise to support what Mr. Gurupadaswamy has said.

SHRI SURENDRA PAL SINGH: Sir, I do not know how the hon. Member can say that we are helpless in the matter. Of course, we are helpless in the sense that we are acting according to certain norms of international behaviour and we have got very good relations with the Soviet Union. We do protest whenever we Pnd that they are acting against our interests; that we have been doing all along. On several occasions we have pointed out such things to the Russians.

SHRI LOKANATH MISRA: Onesided friendship.

SHRI SURENDRA PAL SINGH: We have been lelling them that have to be a bttle careful about these broadcasts, because they may cause misunderstandings; if anything is done which we consider an interference in our internal affairs or is likely to cause some trouble, then

we certainly go to the extent of saying that this will adversely affect our relations with them and the Russians take note of that and they do everything possible to impress upon the organisers of the Radio Peace and Progress to change the tone of their broadcasts.

SHRI BHUPESH GUPTA: But do you in your letters ever write that your Government is thinking of stopping advertisements which indulge in anti-Soviet campaign, thereby financing anti-Soviet propaganda?

(Interruption)

श्री राजनारायण : भूपेश गूप्त के सवाल में हमारा भी जोड़ लीजिए कि प्रो-सोवियत प्रचार गलत ढंग से लिंक और पैट्रियट आदि द्वारा होता है । यह सोवियत की चिट्ठी है और उनको सरकार एडवर्टाइजमेंट देना बंद कर देगी ।?

SHRI SURENDRA PAL SINGH: Sir, a number of broadcasts are made by Radio Moscow and Radio Peace and Progress; we do not protest every time; we protest only when we think that some broadcasts are an interference in our internal affairs or which are likely to cause some misunderstandings.

SHRI BHUPESH GUPTA: Have you taken any care to write to America that Mr. C. B. Gupta should be televised in the United States of America along with Mr. Nijalingappa?

(Interruptions)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Man Singh Varma, be brief.

SHRI MAN SINGH VARMA: You say 'brief only to us, not to others.

माननीय उपमंत्री जी ने अपने स्पष्टीकरण में बार बार इन शब्दों को दोहराया है कि हमारे और रूस के बहुत अच्छे संबंध हैं । यह उन्होंने कई बार कहा है ।

श्री उपसभापति : आप सवाल पूछिये ।

L/P(D)7RSS—11

श्री मानसिंह वर्मा : मैं पूछ रहा हूं । दूसरों ने जितना समय लिया है उतना समय मैं भी ले सकता हूं, लेकिन अगर मैं कम समय लेता हूं तो हमारी सज्जनता को कमजोरी न समझ लिया जाय ।

तो मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि आपके अच्छे संबंध उस मित्रता के स्तर तक पहुंच गये हैं कि ऐसा ज्ञात होता है कि आपका प्रचार भी उनके द्वारा होता है । क्योंकि मैं यह देख रहा हूं कि जब से राष्ट्रपति का चुनाव हुआ है उस समय से ; और उस समय से क्या राष्ट्रपति के चुनाव के बाद भी उन्होंने मनमाने ढंग से आपका प्रचार किया है । उस के पश्चात् भी बराबर इस प्रकार के प्रसारण वहां से होते रहे हैं । तो क्या आप की मित्रता इस स्तर तक पहुंच चुकी है कि आपका प्रचार वहां से किया जाय । आप के यहां का जो प्रसारण क्षेत्र है वह तो आपके लिए प्रचार करता ही है, किन्तु उससे आप संतुष्ट न हो कर, रूस, जो कि आपका मित्र हो चुका है, के द्वारा भी आप अपना प्रचार कराना चाहते हैं और वह हो रहा है, क्या यह बात सत्य है ?

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : अध्यक्ष महोदय, यह बात कतई गलत है ।

SHRI BANKA BEHARY DAS (Orissa): Mr. Deputy Chairman . . .

SHRI BHUPESH GUPTA: Sir what about my question? I wanted to know whether they have written to the United States of America to televise Mr. C. B. Gupta along with Mr. Nijalingappa and the Al Capones.

श्री राजनारायण : सी० बी० गुप्त मास्को भेज दिये जायें ।

SHRI BANKA BEHARY DAS: Mr. Deputy Chairman. I think there is a certain amount of confusion in the mind of the -non. Minister because

[Shri Banka Behary Das]

whenever a question has been asked, he has evaded that question and 1 have to repeat that question. I would like to know from the Minister whether this Radio Peace and Progress is a free radio or a State agency or a controlled radio, because we are not concerned with what the Moscow Government says. It is much more important from your point of view, if you want to send a protest note, to identify the character of that Radio. Once you say that it is controlled, then definitely whenever there is some announcement from that Radio against India, then it should be taken as interference in our internal affairs. But if you characterise that Radio as a free Radio, then you have no right to send any protest note. So I categorically want to ask this question whether the Radio Peace and Progress is a controlled Radio or is an autonomous and free Radio. I may remind you here that at the time of the last General Election when this question arose, Mr. K. K. Shah was the Information and Broadcasting Minister. I still remember his words. He admitted in this House that this Radio is a controlled Radio because there is nothing like a free Radio or a free press in the Soviet Union. I am reminding you about it lest you should make a mistake. So I want to know from the Government whether it has shifted its position or it still continues to believe that this is a conti oiled Radio. You must be very sure about it before you give the answer.

Secondly, I find that there is a certain amount of confusion in his mind. Whenever the question of Radio Peace and Progress and newspapers of the Soviet Union comes, he tries to confuse it with the Radio and newspapers of other places. If it is American Reporter or any other agency or newspaper which is controlled by the Western world and if it tries to interfere in the affairs of the Government of India, then you can definitely protest against it. Sir, here I have got a copy of the text of the AIR Code. This is a nine-point Code of the AIR which is definitely a Government agency in this country. The first point in that Code is that broadcasts on the All India Radio by individuals will not permit criticism of friendly countries. We know that if there is a criticism made by anybody in his broadcast speech against any friendly country, then it is censored. That has been our past experience, I remember in 1957 there was only one sentence in my broadcast—God that has failed—and this was censored, although it was absolutely innocuous. And since 1957 I have not gone to your All India Radio only because of this single sentence having been cen^ sored from my broadcast. The Government thought that by that sentence I had done something which criticised our friendly countries. So I want to know from the hon. Minister whether he regards this Radio as a controlled Radio or a free Radio, irrespective of the explanation of the Moscow Government. Secondly, whenever an occasion arises when we feel that thure is interference in our internal affairs—of course we should not be very touchy about these things —we should have every right to protest and we should protest against it.

SHRI SURENDRAPAL SINGH: The hon. Members can have different opinions about the nature of the Radio Peace and Progress. Some hon. Members said that it is under the control of the USSR Government and others said that it is not under the control of the USSR Government but we have to go by the statement of the USSR Government and they have dearly said that this is an autonomous body and so we have to accept that. The only point for consideration is, if the broadcasts which emanate from this Radio Peace and Progress or from the Radio Moscow or from anywhere else, are taken by us to be of damaging nature, we will certainly protest. We have protested in the past and we will protest again in the future, but if it is not a broadcast that is damaging to us, I do not see why we should protest against it.

SHRI BANKA BEHARY DAS: Unless you say that it is a controlled radio, you have no right to protest.